३४७१

श्रीमंत सरकार गायकवाड महाराजा साहेबे
शेहेर वडोदरामां स्थापन करेली

संगीत शाळामां चालती गायननी चिजोनुं

प्रथम पुस्तक.

आ पुस्तक

मुर्तुजाखां मौलाबक्ष

सरकारी गायनशाळाना पेहेला आसिस्टंट मास्तर

एओए,

श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा गायकवाड

सेनाखासखेल समशेर बहादुर

एमनी मदतथी,

मुंबईमां

जोईंट स्टाक प्रिंटिंग प्रेस

तथा

शेहेर वडोदरामां

बडोदावत्सल छापखानामां छाप्युं.

संवत १९४४.

सन १८८८.

अनुक्रमणिका.

सूचना.

अमारा पिता संगीत तत्ववेत्ता प्रोफेसर मौलाबक्षजी पासेथी संपादन करेली आ अनुपम युक्तिसह विद्या, बीजा सर्व लोकेने उपयोगी थई पडे एवा हेतुथी अमोए गोठवी प्रगट करी छे. तेनो लाभ गायनकळाना हितेच्छु लोक सारीरीते लेशे एवी उमेद छे.

ग्रंथकर्त्ता.

पाठ १.

राग शंकराभरण.

.ताल चतुश्र, जाति तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६

आरोही — .अवरोही

सा̄ सा̄

नी — नी

ध — ध

प — प

म — म

ग — ग

री — री

सा — सा

पाठ २.

रा० शंकराभरण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६/IIII सा | री | ग | म | प | ध | नी | सां | सां | नी | ध | प | म | ग | री | सा ||

पाठ ३.

रा० शंकराभरण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६/IIII सा सा | री री | ग ग | म म | प प | ध ध | नी नी | सां सां | सां सां | नी नी | ध ध |

प प | म म | ग ग | री री | सा सा ||

पाठ ४.

रा० शंकराभरण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, तीश्रगति, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६/IIII सा सा सा | री री री | ग ग ग | म म म | प प प | ध ध ध | नी नी नी | सां सां सां |

सां सां सां | नी नी नी | ध ध ध | प प प | म म म | ग ग ग | री री री | सा सा सा ||

पाठ ५.

रा॰ शंकराभरण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

१६ सासासासा | रीरीरीरी | गगगग | मममम | पपपप | धधधध | नीनीनीनी | सा सा सा सा |

सा सा सा सा | नीनीनीनी | धधधध | पपपप | मममम | गगगग | रीरीरीरी | सासासासा

पाठ ६.

रा॰ शंकराभरण. ताल रुपक अथवा दादरो, विलंबकाळ, मात्रा ६.

६ सारीग | रीगम | गमप | मपध | पधनी | धनीसा | सानीध | नीधप | धपम | पमग | मगरी | गरीसा

पाठ ७.

रा॰ शंकराभरण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

योगीको सब सुख रुप यह, रोगीको सब दुःख रुप यह.

१६ सा | री ग | सा री ग म | प ध नी सा | सा | नी ध | सा नी ध प | म ग री ग

यो | गीको | स ब सु ख | रु प य ह | रो | गी को | स ब दुः ख | रु प य ह

पाठ ८.

रा० काफी. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

रब्बरटेसे पाप कटेहे, लोभीका सब मान घटेहे; जो नर संगी हे विषयोंके, सो कैसेकर पाप झटेहे.

१६/SSSS	ग्ऽरीरीग्ऽसा	रीमम प् सा	नी ध् म् ध प	ग्ऽरीरी नी्ऽसा	सा सा सारीनी	ध् म म प् सा
	र ब्ब र टे से	पाप कटे हे	लोभी कासब	मा न घ टे हे	जो न र सं गी	हे विषयोंके
	नीऽध्म्धप	ग्ऽरीरीनी्ऽसा				
	सोकैसेकर	पा प झ टे हे.				

पाठ ९.

रा० शंकराभरण. ताल दादरो, विलंबकाळ, मात्रा ६.

गानाहो हरिगुण भक्तिसे, लेनाहो बोध सद्गुरुसे.

६/०१	सा री ग्	म् प् ध्	नीसा री	सा ऽ	सा नी ध्	प् म् ग्	री सा नी	सा ऽ
	गा ना हो	हरि गु	ण भ क्ति	से	ले ना हो	बो ध स	द् गु रु	से

पाठ १०.

रा० शंकराभरण. ताल जलद दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

साधन न कोहु किया, दे सुमति हे श्रीहरि! कोन करे आप विना सुख मुजे आये.

६ सा रीगम | प धनींसां | सां नीधप | म ग रीनी | सा ग म प | सां नी ध प | ध प म ग | री सा

साधनन | कोहुकिया | दे सुमति | हेश्रीहरि | कोनकरे | आपविना | सुखमुजे | आ ये

पाठ ११.

रा० कामोद. ताल तेवरो अथवा तीश्रजाति, त्रिपुट, मध्यकाल, मात्रा ७.

लेनाहो सतगुरुसे सुबोध, जासेहो जात काम मोह क्रोध;

आवेगा विवेक विचार तब, पावेगा धन सनमान सब.

७ सा प प प ध प म ग री स नी | री री प ग म री ग सा री नी सा |

ले ना हो स त गु रु से सु बो ध | जा से हो जा त का म मो ह क्रो ध |

प सां सा री सा नी ध प म ग म | री री प ग म री ग सा री नी सा

आ वे गा वि वे क वि चा र त ब | पा वे गा ध न स न मा न स ब

पाठ १२.

रा० कल्याण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

जगमें जनमीके पायो ग्यान न तो दुःखके बि बोवेगा, ब्रह्म भजेगा तो सुखसे तुं सोवेगा.

१६ गग	रीसासान्रीसा	रीरीगरी री	ग म,म,पम,	गरीसा | गग	रीसासान्रीसा	
ऽऽऽऽ जग	मेंजनमीके	पायो ग्यान न	तो दुःखके बि	बोवेगा | जग	में ज न मी के	

नीध ध प म,	ग म,म,प म,	ग री सा	▪▪▪
ब्रह्म भजेगा	तो सुखसे तुं	सोवेगा	

पाठ १३.

रा० हमीर. ताल चतुश्रजाति, चोतालो, मध्यकाळ, मात्रा १२.

परब्रह्म भज हो जीव तुं, ओर सब तज हो जीव तुं; विषयको सजता क्युं तुं, मूढले समज ना सदा तुं.

१२ सा	सारीगम	धनीसा	नीधप | प	पगमरी	गमधप	
००।। प	रब्रह्म	भजहो	जीवतुं | ओ	र सब	तजहोजी	

रीसा	ग	मधनीरी	सानीध	धप	प	प गमरी	गम धप	रीसा
वतुं	वि	षयको	सजता	क्युंतुं	मू	ढलेस	मजनास	दा तुं

पाठ १४.

रा० बिहाग. ताल झपतालो, मध्यकाळ, मात्रा १०.

गुरुदेव तव सेव करी, सुजन सब तरत; ओर सब मूढ तो दुःख सहत ओर मरत;
तव चरण शरण ग्रही, सुमति यह जीव धरत.

१० नीसागम	पनीसानी	धप मगम	पम गरीसा	सागमप	नी री सा	गरी सानीध	
गुरुदेव	तवसेव	करी सुजन	सबतरत	ओरसब	मूढतो	दुःखसहत	
पमगरीसा	गमपर्न.नी	सानीधपम	गरीगमप	धम गरीसा			
ओरमरत	तवचरण	शरणग्रही	सुमतियह	जीवधरत			

पाठ १५.

रा० देस. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

हे मन मेरा हारि भज नीत, खटपट सब तज स्थिरकर चित;
या जग दुःखरुप सब जन जानत, तुं नाही समजत, चलता विपरीत.

१६ रीमप	नीसा	सासा नी	ध प धम	नीधपम	री ग	मपधम	गरीगसा	री म प	ममप	
हेमन	मे रा	_ ह रि	भजनीत	खटपट	स ब	तजस्थिर	कर चित	याजग	दुःखरुप	

पपनीनी	सा सा नी	सा सा सा	रीरीरीसा	सा सा नी	ध प म ग
सबजन	जा न त	तुं ना ही	समजत	च ल ता	वि प री त

पाठ १६.

रा० खमाच. चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

जग यहहै क्षणिक ताते असत तदापि जन सब मानत सतवत;
कहेत हैं नृसिंह नित हरि भज तजि भ्रम यह ताते सुख होत भोग भोगत.

१६ ग | ग म प ध | नी सा नी | नी ध सा नी | ध प म | ग | म री सा |
ज | _ ग य ह | है क्ष णी | _ क ता ते | अ स त | त | _ दा पि |

नी सा ग म | प ध सा नी | ध प म | ग | ग म प ध | म नी ध नी | सा नी सा |
ज न सं ब | मा न त स | त व त | क | _ हे त हें | नृ सिं ह नि | त ह रि |

सा नी सा री | सा नी ध प | ग म री ग | सा री नी सा | नी ध प
भ ज त जी | भ्र म य ह | ता ते सु ख | हो त भो ग | भो ग त

पाठ १७.

रा॰ एमनकल्याण. ताल चतुश्रजांति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

याजगमें आया नरधारी मानुखी तन क्युं सुधरतना, मुंढ भयोयाचे विषयादि जासे होवे अपयश रतना,

१६ नी ध ध प म | ग म म ग री | नी री ग म म | ग री री नी री सा | सा री री ग म |
ऽऽऽऽ या ज ग में आ | या न र धा री | मा नु खी त न | क्युं सु ध र त ना | मुं ढ भ यो या |

री ग म, प ध | नी ध सा नी | प ध म, प ग री ग ॥
चे विषयादि | जा से हो वे | अ प य श र त ना ॥

पाठ १८.

रा० बाघेश्रीकानडा. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

देख समे यह खोटो आयो नारी ना माने स्वामीको, सुत न गीनत निज सुखद पिताको लेत धरम सब नीच गुलामीको.

१६ नी ध ध | नी ध प | ग म ग म | री सा | सा री | री सा प | ग म ग म | री सा |
देखस | में यह | खो टो | आ यो | ना रीं | ना मा | ने स्वा | मी को; |

सा री म प | नी ध प ध | म ध प म | ग री | री सा नी | ध प म प |
सु तनगी | न तनिज | सुखदपि | ता को | ले त ध | रमसब |

म ध प ग | म री सा ॥
निचगुला | मी को ॥

पाठ ११.

राο भैरवी. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

श्रवण सुनत मुख बोलत बचन घ्रान सुंघत फूलन रुप देखत द्रगनहे;
जाके चक्षु हें प्रकाश अंधकार भयो नाश वाके जहां रहे तहां सुरजकी धुपहे.

१६ नीᵛ सा गᵛ म | धᵛ प धᵛ | प नीᵛ धᵛ प | म प म धᵛ | प म गᵛ री | गᵛ प म धᵛ | प म गᵛ म
श्र व ण सु | न त मु | ख बो ल त | ब च न घ्रा | न सुं घ त | फू ल न रु | प दे ख त

गᵛ रीᵛ सा रीᵛ | नीᵛ सा गᵛ म | धᵛ प धᵛ | प नीᵛ धᵛ प | म धᵛ धᵛ नीᵛ | सा रीᵛ सा |
द्र ग न हे | श्र व न सु | न त मु | ख बो ल त | जा के च क्षु | हे प्र |

रीᵛ सा सा | सा नीᵛ धᵛ प | सा गᵛ री गᵛ | सा री नीᵛ सा | धᵛ नीᵛ धᵛ प |
का श अं | _ ध का र | भ यो ना श | वा के ज हां | र हे त हां |

म गᵛ गᵛ म | गᵛ रीᵛ सा रीᵛ
सु र ज की | धु प हे

पाठ २०.

रा० झींझोटी. ताल जलद, दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

सृष्टी करता रबके सिवा कोनहे कहोतो सही, भ्रमसे भुल परी ग्यानसे कहोतो सही; परमेश्वर पर उपकारी परब्रह्म परहितकारी आदिअंत वोहीहे फीर कोनहे कहो तो सही.

६ रीॗ ग म प म | ध प म ग रीॗ | म प म गॖ सा | रीॗ ग म पॖ | ऽ प ध साॗ | नीॗ ध ध पॖ |
सृष्टी क र ता | र ब के सि वा | को न हे क | हो तो स ही | भ्र म से | भु ल प री |

म प म गॖ सा | रीॗ ग म पॖ | म प नीॗ नी नी | सा नी सा सा सा सा | सा सा नीॗ नीॗ |
ग्या न से क | हो तो स ही | प र मे श्व र | प र उ प का री | प र ब्र ह्म |

सा री सा नी ध प | पॖ सा नीॗ सा | ध नी ध प प प | म प म गॖ सा | रीॗ ग म पॖ |
प र हि त का री | आ दि अं त | वो ही हे फी र | को न हे क | हो तो स ही |

पाठ २१.

रा० माढ. ताल बिलंदी अथवा होरी, (दिपचंदी), मध्यकाळ, मात्रा १४.

चेतके चित्त लगाना जगतमें चेतके चित्त लगाना; आयेथे तबतो धन नही लाये जाते कछुना लेजाना.

१४ सा ग म	प ध नी	प ध प म	ग म प ध नी रीं	सां नी ध प	ग म री सा
चे त के	चि त्त ल	गा ना ज	ग त में	चे त के	चि त्त ल

ग म सा प	ग म री सा	म ग म	प प प	नी सां नी ध प	ग म री सा
गा ना ज	ग त में	आ ये थे	त ब तो	ध न न ही	ला ये

म ग म	प ध नी	प ध प म	ग म प ध नी रीं	सां नी ध प	ग म री सा
जा ते क	छु ना ले	जा ना ज	ग त में	चे त के	चि त्त ल

ग म सा प	ग म री सां
गा ना ज	ग त में

पाठ २२.

रा० मांझी. ताल जलद, दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

तार बोतेहारो अखत्यार हे तारो, ना तारो भक्त जन तारे जीन तारवेको काम कीनो

बिना भक्ति तारो तो तार बोते हारोहे.

| ६ गृ गृ रीृ गृ | मृ पृ धृ प | म प म गृ री सा | री ग़ म़ प़ ध़ प़ म़ प़ म़ ग़ री़ सा़ |
| ता र बो ते | हा रो अ ख | त्या र हे ता | रो ना ता रो |

| ऽ म म प ध | नी सां सां सां | सां गं रीं सां सां रीं | सां नी ध धृ पृ | नी नी सां सां रीं |
| भ क्त ज न | ता रे जी न | ता र बे को | का म की नो | बि ना भ क्ति |

| सां नी ध प ध | ध नी ध प धृ प | म प म गृ री सा |
| ता रो तो | ता र बो ते | हा रो हे |

पाठ २३.

रा० मालकौंस. ताल तिश्रजाति, सुलफाक, मध्यकाळ, मात्रा ८.

जनम लीयो नरको, करत काम खरको; होवत नाही घरको,

ना होत मुंढ परको.

८	सा सा म	गᵛ म	सा नीᵛ धᵛ	गᵛ म धᵛ	सां नीᵛ धᵛ	म गᵛ म सा
	ज न म	लि यो	न र को	क र त	का म	ख र को
	गᵛ म धᵛ	नीᵛ सां	धᵛ नीᵛ सां	सां नीᵛ धᵛ	म सां	नीᵛ धᵛ म गᵛ म सा
	हो व त	ना ही	घ र को	ना हो त	मुं ढ	प र को

पाठ २४ सलामी.

रा० शंकरा भरण, ताल चतुश्रजाति, रुपक विलंबकाळ, मात्रा ६.

हे हरि सुतन धन दे सुधाम सुवाम दे सुजन, हे प्रभु रायको प्रजाको साधुको सर्वको दे सुमन;

दिजीये आपको यजन भजन, रेन दिवस हे विभु करसके हमसु चिंतन.

६/० सा सा री	नी सा री	ग ग म	ग री सा	री सा नी	सा प ध नी	सा सा री
हे ह रि	सु त न	ध न दे	सु धा म	सु वा म	दे सु ज न	हे प्र भु

नी सा री	ग ग म	ग री सा	री सा नी	सा री ग म	प प प	प म ग
रा य को	प्र जा को	सा धु को	स र्व को	दे सु म न	दी जी ये	आ प को

म म म	म ग री	ग म ग री सा	ग म प	ध प म ग री० ग	सा प ध नी
य ज न	भ ज न	रे न दि व स	हे वि भु	क र स के हं म	सु चिं त न

पाठ १.

रा० शंकराभरण, ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

१६								
||||	सा	री ग	सा री ग म	प ध नी सां	सां	नी ध	सां नी ध प	म ग री ग
	यो	गी को	स ब सु ख	रु प य ह	रो	गी को	स ब दुः ख	रु प य ह

तान १.

प म ध प	सां नी ध प	सां नी ध प	म ग री सा
आ.	आ.	आ.	आ.

तान २.

सा री ग म	प म ग म	सा री ग म	प ध नी सां	सां नी ध प	म प ग म
आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.

सां नी ध प	म ग री सा
आ.	आ.

तान ३.

॥ सारीगम | प ग़ म | सारीगम | पधनीसां | सांनीधप | ध म़ प |
आ. | आ. | आ. | आ. | आ. | आ. |

॥ सांनीधप | मगरीसा ॥
आ. | आ. |

तान ४.

॥ सा री ग सा | री ग सारी | सारीगम | पधनीसां | सां नी ध सां | नी ध सांनी |
आ. · आ. | — आ. | आ. | आ. | आ. आ. | — आ. |

॥ सांनीधप | मगरीसा ॥
आ. | आ. |

तान ५.

सा सा री री | ग. ग म म | सा री ग म | प ध नी सां | सां सां नी नी | ध ध प प |
आ. आ. | आ. आ. | आ. | आ. | आ. आ. | आ. आ. |

सां नी ध प | म ग री सा |
आ. | आ. |

तान ६.

सा री ग म | प ध नी सां | सां नी ध पं | म ग री सा | सां नी सां रीं | सां नी ध प |
आ. | आ. | आ. | आ. | आ. | आ. |

म ग प म | ग री सा |
आ. | आ. |

पाठ २.

रा० काफी. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६ गऽ री री गऽ सा | री म म प सा | नी ध म ध प | ग री री नी सा | सा सा सा री नी |
र ब्ब र टे से | पा प क टे हे | लो भी का स ब | मा न घ टे हे | जो न र सं गी |

ध म म प सा | नी ध म ध प | ग री री नी सा |
हे वि ष यों के | सो कै से क र | पा प झ टे हे |

तान १.

ग री सा री सा नी सा नी | ध नी ध म प सा | नी ध म ध प | ग री री नी सा |
आ. आ. आ. | आ. आ. | लो भी का स ब | मा न घ टे हे |

तान २.

ग री म ग प म ध प | सा नी ध म प सा | नी ध म ध प | ग री री नी सा |
आ. आ. आ. आ. | आ. | लो भी का स ब | मा न घ टे हे |

तान ३.

प ध नी सा री सा नी सा	ध नी ध म प सा	नी ध म ध प	ग री री नी सा
आ.	आ.	लो भी का स ब	मा न घ टे हे

तान ४.

ग री म ग री सा री सा	नी ध प म प सा	नी ध म ध प	ग री री नी सा
आ.	आ.	लो भी का स ब	मा न घ टे हे

तान ५.

सानीसारी सानीधप	धममपसा	नी ध म ध प	ग री री नी सा
आ. आ.	आ.	लो भी का स ब	मा न घ टे हे

पाठ ३.

रा० शंकराभरण: ताल चतुश्रजाति, रूपक मध्यकाळ, मात्रा ६.

| सा री ग | म प ध | नी सां रीं | सां ऽऽ | सां नी ध | प म ग | री सा नी | सा ऽऽ |
| गा ना हो | ह रि गु | ण भ क्ति | से | ले ना हो | बो ध स | दू गु रु | से |

तान १.

सा री ग म प ध | नी सां रीं सां नी ध | प ध प म ग री |

आ. | आ. | आ. |

तान २.

सांनीसांरीं सां नी ध प म ग री सा |

आ. आ. आ. |

तान ३.

ग् म् प् नी् सा् नी् ध् प् म् ग् री् सा् ।
आ. आ. आ.

तान ४.

ग् री् सा् री् सा् नी् सा् नी् ध् प् म् ग् | सा नी् ध् प् म् प म् ग् री् सा ।
आ. आ. आ. | आ. आ.

तान ५.

सा् ग् री् सा् नी् सा् नी् ध् प् म् ग् री्
आ. आ आ.

पाठ ४.

रा० शंकराभरण. ताल दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

सा री ग म	प ध नी सां	सां नी ध प	म ग री नी	सा ग म प	सां नी ध प
सा ध न न	को हु की या	दे सु म ति	हे श्री ह रि	को न क रे	आ प वि ना

ध प म म	री ऽ सा ऽ
सु ख मु जे	आ ये

तान १.

सा री ग म प म ग री ग म प ध	नी सां रीं सां नी ध प म ग री सा नी
आ. आ.	आ. आ.

तान २.

ग म प ध नी ध प म ग री सा नी	सां नी सां रीं सां नी ध प म ग री सा
आ. आ.	आ. आ.

तान ३.

ग रीसानीध पमगरीसा नी ।
आ. आ.

तान ४.

सा रीगम । गमपधनीसा नीधपम गरी ।
साधनन । आ. आ.

तान ५.

सा रीगरीरी । सानीधपसानी धपमगरीसा ॥
साधनन । आ. आ.

पाठ ५.

रा० कामोद. ताल तिश्रजाति, त्रिपुट अथवा तेवरो, मध्यकाळ, मात्रा ७.

७ सा प प प् ध् प् म् ग् री् सा् नी् | री री प ग् म् री् ग् सा् री् नी् सा् |
ले ना हो स द् गु रु से सु बो ध | जा से हो जा त का म मो ह क्रो ध |

प सा सा री् सा् नी् ध् प् म् ग् म् . | री री प ग् म् री् ग् सा् री् नी् सा् |
आ वे गा वि वे क वि चा र त ब | पा वे गा ध न स न मा न स ब |

तान १.

ग् म् ध् नी् सा् री् सा् नी् ध् प् म् ग् री् सा् |
आ. आ. आ. |

तान २.

ग् म् री् सा री् स् नी् ध् प् म् ग् री् सा् |
आ. आ. आ. |

तान ३.

ग् म् प् ध् नी् सां् रीं् रीं् सां् नी् ध् प् म् प् | ध् नी् सां् नी् ध् प् म् ध् प् म् ग् री् सा ॥

आ. आ. आ. | आ. आ. आ.

तान ४.

रीं् रीं् प् प् ध् ध् प् प् नी् नी् रीं् रीं् सां | गं् रीं् सां् रीं् सां् नी् सां् नी् ध् प् म् ग् री् सा् ॥

आ. आ. आ. आ. आ. आ. | आ. आ. आ. आ.

तान ५.

सा् री् ग् म् री् ग् म् प् ग् म् प् ध् म् प् | ध् नी् सां् नी् ध् प् म् ध् प् म् ग् री् सा ॥

आ. आ. आ. आ. | आ. आ. आ. आ.

पाठ ६.

रा० कल्याण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६/SSSS	ग ग	री सा सा नी सा	री री ग री री	ग म म प म	म री सा
	ज ग	में ज न मी के	पा यो ज्ञा न न	तो दुः ख के बी	बो वे गा
	ग ग	री सा सा नी सा	नी ध ध प म	ग म म प म	ग री सा
	ज ग	में ज न मी के	ब्र ह्म भ जे गा	तो सु ख से तु	सो वे गा

तान १.

ग ग	री सा सा नी सा	सा री ग री ग म ग म	प ध प म ग म प म	ग री सा
ज ग	में ज न मी के	आ. आ. आ.	आ. आ.	आ.

तान २.

ग.ग	री सा सा नी सा	सा नी सा री सा नी ध प	म प ध नी सा नी ध प	ग री सा
ज ग	में ज न मी के	आ. आ.	आ. आ.	आ.

तान ३.

ग ग	री सा सा नी सा	सा ग री म, ग प म, ध	प नी ध सां सां नी ध प	प ध प म, ग री	
ज ग	में ज न मी के	आ. आ. आ. आ.	आ. आ. आ.	आ.	

तान ४.

ग ग	री सा सा नी सा	ध नी सा री ग री सा नी	ध नी सा री ग म, प म,	ग री सा	
ज ग	में ज न मी के	आ. आ.	आ. आ.	आ.	

तान ५.

ग ग	री सा सा नी सा	री री ग री री	ग म, ध नी सां री सां नी	ध प म, ग री सा	
ज ग	में ज न मी के	पा यो ग्या न न	आ. आ.	आ.	

पाठ ७.

रा० हमीर. ताल् चतुश्रजाति, चौतालो, मध्यकाळ, मात्रा १२.

१२ सा | सा री ग म | धृ नी सां | नी ध प | प | प ग म री | ग म ध प | री सा |
०॥ प | _ र ब्र ह्म | भ ज हो | जी व तु | ओ | _ र स ब | त ज हो जी | व तु |

ग | म ध नी री | सां नी ध | ध प | प | प ग म री | ग म ध प | री सा |
वि | _ ष य को | स ज ता | क्युं तु | मुं | _ ढ ले स | म ज ना स | दा तु |

लयकी बांट (१)

सा | सा री ग म | धृ नी सां | सां नी ध प म ग |
प | _ र ब्र ह्म | भ ज हो | प र ब्र ह्म भ ज |

तान २.

सा	सा री ग म	नी सा री ग म ध नी सां	नी ध प म ग री	ग
प	_ र ब्र ह्म	प र ब्र ह्म भ ज रे जी	व तु प र ब्र ह्म	

तान ३.

सा	सा री ग म	सां रीं सां नी ध नी सां	सां नी ध प म ग	ग
प	_ र ब्र ह्म	प र ब्र ह्म भ ज	_ रे जी व तु	

तान ४.

सा	सा री ग म	गं. रीं सां नी रीं सां नी ध	सां नी ध प म ग	ग
प	_ र ब्र ह्म	प र ब्र ह्म भ ज रे जी	व तु प र ब्र ह्म	

पाठ ८.

रा० बिहाग. ताल तीश्रजाति, झपताला, मध्यकाळ, मात्रा १०.

१० नी सा ग म	प नी सां नी	ध प म ग म	प म ग री सा	सा ग म प
गु रु दे व	त व से व	करी सु ज न	स ब त र त	ओ र स ब
नी री सां	गं रीं सां नी ध	प म ग री सा	ग म प नी नी	सां नी ध प म
मुं ढ तो	दुः ख स ह त	ओ र म र त	त व च र ण	श र ण ग्र ही
ग री ग म प	ध म ग री सा			
सु म ती य ह	जी व ध र त			

तान १.

नी सा ग म प नी सां रीं सां नी	ध प म ग म प म ग री सा
आ. आ. आ.	आ. आ.

तान २.

गरीसानी रीसानीध पम | पधनीरी सानीधपमग |
आ. आ. आ. | आ. आ.

तान ३.

गमपनी सारीसानीधप | गरीसानी धपमगरीसा |
आ. आ. | आ. आ.

तान ४.

पमगरी नीधपमगरी | नीरीसानी धपमगरीसा
आ. आ. | आ. आ.

पाठ ९.

रा० देस. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

१६	री म प	नी सां	सां सां नी	ध प ध म	नी ध प म	री ग	म प ध म
!!!!	हे म न	मे रा	_ ह रि	भ ज नि त	ख ट प ट	स ब	त ज स्थि र
	ग री ग सा	री म प	म म म प	प प नी नी	सां सां नी	सां सां सां	
	क र चि त	या ज ग	दुः ख रु प	स ब ज न	जा न त	तु ना हीं	
	री री री सां	सां सां नी	ध प म ग				
	स म ज त	च ल ता	वि प री त				

दुगन.

री म प	नी सां सां सां नी	ध प ध म नी ध प म	री ग म प ध म
हे म न	मे रा ह रि	भ ज नि त ख ट प ट	स ब त ज स्थि र

ग़ री़ ग़ सा़ री म़ प़ | म़ म़ म़ प़ प़ प़ नी़ नी़ | सा सा़ नी़ सा सा़ सा़ |
क र चि त या ज ग | दु. ख रुं प स ब ज न | जा न त तु ना हीं |

री़ री़ री़ सा़ सा़ सा़ नी॰ | ध़ प़ म़ ग़ री म़ प़ |
स म ज ब च ल ता | वि प री त हे म न |

तान १.

री म प | म प नी सा | रीं सा नी॰ध | प म ग री |
— | आ. | आ. | आ. |

तान २.

रीं म प | नी रीं सा नी॰ | ध प सा नी॰ | ध प म ग |
— | आ. | आ. | आ. |

तान ३.

रीु म प | नी सा री ग | म प ध म | ग री ग सा ||

_ | आ. | आ. | आ.

तान ४.

रीु म प | म् ग् री् सा् री् सा् नी् ध् | सा् नी् ध् प् नी् ध् प् म् | सा् नी् ध् प् म् ग् री् सा् ||

_ | आ. आ. | आ. आ. | आ.

पाठ १०.

रा० खंमाच. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ मात्रा १६.

१६ म. | ग म प ध | नी सां नीॅ | नीॅ ध सां नीॅ | ध प म | ग | म रीु सा |

॥॥ ज | _ ग य ह | हे क्ष णी . | _ क ता ते | अ स त | त | _ दा पि |

नी सा ग म | प ध सा नी | ध प म | ग | ग म प ध | म नी ध नी |
ज न स ब | मा न त स | त व. त | क | _ ह त हे | नृ सिं ह नी |

सा नी सा | सा नी सा री | सा नी ध प | ग म री ग | सा री नी सा | नी ध प |
त ह रि | भ ज त जी | ब्र ह्म य ह | ता ते सु ख | हो त भो ग | भो ग त |

दुगन.

ग | ग म प ध | नी सा नी नी ध सा नी | ध प म ग म री सा |
ज | _ ग य ह | हे क्ष णी क ता ते | अ स त त दा वि |

नी सा ग म प ध सा नी | ध. प म ग ग म प ध | म नी ध नी सा नी सा |
ज न स ब मा न त स | त व त क ह त हे | नृ सिं ह नी त ह रि |

सा नी सा री सा नी ध प | ग म री ग सा री नी सा | नी ध प ग ग म प ध |
भ ज त जी ब्र ह्म य ह | ता ते सु ख हो त भो ग | भो ग त ज ग य ह |

तान १.

ग | ग म प ध | ग् म् प् ध् नी् सा् री् री् | सा् नी् ध् प् ध् नी् सा् री् | सा् नी् ध् प् म् ग् |
| — | आ. आ. | आ. आ. | आ. |

तान २.

ग | ग म प ध | ग् म् प् ग् म् प् ग् म् | प् ध् नी् सा् री् री् सा् नी् | सा् नी् ध् प् म् ग् |
| — | आ. आ. आ. | आ. आ. | आ. |

तान ३.

ग | ग म प ध | ग् री् सा् री् सा् नी् सा् नी् | ध् नी् ध् प् म् प् ध् नी् |
| — | आ. आ. आ. | — आ. आ. |

सा् री् सा् नी् ध् प् |
आ.

तान ४.

ग	ग म प ध	ग म री ग री सा री सा	नी सा नी ध प ध नी री	
		आ. आ. आ.	आ. आ	

सा नी ध प म ग	
आ.	

पाठ ११.

रा० शंकराभरण, ताल जलद, दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

जय जय जय विभु अशरन शरन करन सुख जगपर जयहरि अधहर नजर तेरी सुख
करकर हमपर भजुं; भुमिनाथ भवभय हर हाथसाही भव ऊतार राख्य शर्ण
चरण समिप जनम मरन, दुःख तजुं.

६ सा नी	ध प म ग री सा	ग म ग म	सा नी	ध प म ग री सा	
ज य	ज य ज य वि भु	अ श र न	श र	न क र न सु ख	

रीगरीरी | सां नी | ध प म ग री सा | ग म ग ग़ प | प ध नी सां प ग |
जगपर | जय | हरिअधहर | नजरतेरी | सुखकरकर |

रीगरीरी | ग म | प़ ग प़ ग | प ध प प | सां नी | ध़ म ध़ म | ध नी ध ध़ नी |
हमपर | भजुं | भूमिनाथ | भवभय | हर | हाथसाही | भवउतार |

सां़ री ग़ री | सां नी ध प म ग | प ध नी सां प ग | री ग री री
राख्यशर्ण | चरणसमिप | जनममरन | दुःखतजुं

पाठ १२.

रा० शंकरा भरण. ताल तिश्रजाति, एकतालो, मध्यकाळ, मात्रा ३.

प्रतापि लार्ड डफरीन साहब सब हिंदके आज आपने कीई मेहेर पाय ईधर भये; धन्य धन्य गवरनर सयाजिराव रायको, मान ईजत खान पान गान श्रवण तानसह, आज बात बनत चमत्कारी भारी भूमिमें; ईश अमर आयु दो, सयाजि व्हइश रायनको.

३/४ प सा नी | ध ध प | म प म | री म ग | री ग री | ग म ग | री ग री |
प्र ता | पि ला | ई ड फ | री न | सा ह | ब स ब | हिं द |

सा ऽ ा. | सा ऽ री | ग ऽ म | प ऽ ध | म ध प | ग ऽ री | ग ऽ म | प् म् ध् प् सा नी |
के | आ ज | आ प | ने की | ई म | हे र | पा य | ई ध र. |

ध् प् म् ग् री् सा् | प ऽ ध | म प म | री प म | री म ग | सा ऽ री | ग ऽ म |
भ ये | ध न्य | ध न्य | ग व र | न र स | या जि | रा व |
| आ. ज | बा त | ब न त | च म त | का री | भा री |

प् म् ध् प् सा नी | री ऽ ा | ग ऽ री | सा नी ध | री ऽ सा | नी ध प | सा ऽ नी | ध प म |
रा य | को | मा न | ई ज त | खा न | पा न | गा न | श्र व ण |
भु मि | में | ई श | अ म र | आ यु | दो स | या जि | व ई स |

॥	प् स् स् नी् ध् प्	म् प् म् ग् री् सा्	॥
	ता	न स ह	
	रा	य न को	

पाठ १३.

रा० भैरुं. ताल चतुश्रजाति, सुलफाक, मध्यकाळ, मात्रा. १०

नरदेह धरी मन मुंढ रह्यो अब कोन गती तेरी.

॥ १०	सा रीᵛ ग म	धᵛ प	म ग रीᵛ सा	सां नी धᵛ प	नी धᵛ	प म ग रीᵛ	॥
।०।	न र दे ह	ध री	म न मुं ढ	र ह्यो अ ब	को न	ग ती ते री	

पाठ १४.

रा० बिलावल. ताल चतुश्रजाति, आडो चौतालो, मध्यकाळ मात्रा १४.

नर सुनत बोलत देखत न पायो, नर हरिको न भजत जनम खोयो.

१४ सा री | ग प ध सां | नी ध प नीॅ | ध प म ग * ग प | ध सां नी ध |
०।।। न र | सु न त बो | ल त दे ख | त न पा यो | न र | ह री को न |

प नीॅ ध प | प॰म ग री
भ ज. त ज | न म खो यो

पाठ १५.

रा० कालंगडो. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

कर याद अलिकी दंपरदं बिसरे मेरे दंकागं, जूठीहे दुनिया खोटा जमाना रखलीजो॰मौला लाजशरं.

१६ ध प | प म ग | म प | सां नी ध प | ध प | ऽ | * म ग ग | री सा |
।।।। क र | या द अ | लि की | दं प र | दं | | बि स रे | मे रे |

म् ग् प् प् म् ग् रीॅ	सा	ॅ म प धॅ	नी नी सां	ॅ रींॅ सां रींॅ	नी नी सां	
दं . का	गं	जू ठी हे	दु नि या	खो टा ज	मा ना	

ॅ नी् नी् सां नी	धॄॅ प धॅ	नी् नी् रीं्ॅ रीं्ॅ सां् नी् ध्ॅ ध्ॅ	धॅ प	
र ख ली जो	मौ ला	ला. ज श	रं	

पाठ १६.

रा० नारायणी. ताल विलंदी, अथवा दीपचंदी, मध्यकाळ, मात्रा १४.

नमामि महिषासुरमर्दिनी, नमामि मामक पालिनी, (नमामि) महिष मस्तक नटन
वेद विनोदिनी मोदिनी मालिनी मानिनी प्रणतजन सौभाग्य जननी (महिषासुर-
मर्दिनी; नमामि) शंख चक्र शूलांकुशपाणि शक्तिसेना मधुरवाणी पंकज
नयना पंनगवेणी पालित गुरुगुहं पुराणी शंकरार्ध शरीरिणी समस्त
देव तरूपिणी कंकणालंकृताजननी कात्यायनि नारायणि
महिषासुरमर्दिनी.

॥ १४ ग | पृ धृ नीृ | सां नीृ पृ | म गृ रीृ गृ | साृ साृ | सा | नीृ पृ धृ | सा री ग ग रीसानी |
न | मा _ मि | म हि षा | सु र म र्दि | नी _ | न | मा _ मि | मा म |

॥ सा नीृ धृ धृ रीृ | साृ साृ | ग | पृ धृ नीृ | प प ग पृ प प | ध ध ध नीृ प प |
क पा लि | नी _ | न | मा _ मि | म हि ष म स्त क | न ट न वे द वि . |

॥ धृ ध रीृ | साृ ग साृ | नीृ प धृ | धृ नी पृ | सां नी प ध नी पृ | गृ प ग प ध री |
नो दि नी | मो दि नी | मा लि नी | मा नि नी | प्र ण त ज न सौ | भा ग्य ज न नी |

॥ सां नीृ पृ | म गृ रीृ गृ | साृ साृ | ग | पृ धृ नीृ | ऽ ग पृ धृ | ध नीृ धृ |
म हि षा | सु र म र्दि | नी _ | न | मा _ मि | शं ख च | क शू |

॥ पृ मृ गृ | पृ पृ | ऽ साृ रीृ | प मृ गृ | री साृ नीृ धृ | साृ साृ | पृ मृ गृ |
लां कु श | पा णि | श क्ति | से ना | म धु र | वा णी | पं क ज |

म ग़ रीॖ साॖ | ⌐ ग़ प़ ध़ | सा नीॖ ध़ प़ | ⌐ ग़ प़ नीॖ | ध प़ म ग री ग | ग साॖ नीॖ ध़ |
न य ना | पं न ग | वे णी | पा लि त | गु रु गु हं | पु रा |

सा़ सा़ | साॖ सा साॖ नी ध | साॖ सा सा़ ग | प़ प प़ प ध | ध़ नी प़ | ग़ प ध़ साॖ |
णी | शं क रा धें श | री रि णी स | म स्त दे व त | रू पिणी | कं क णां लं |

री ग़ म ग साॖ | सा़ नीॖ प ध़ | ग़ प़ ध रीॖ | सा नीॖ प़ | म ग़ रीॖ ग़ | सा़ सा़ ■
कृ ता ज न नी | का त्या य नि | ना रा य णि | म हि षा | सु र म र्दि | नी

पाठ १७.

रा० आसावरी. ताल चतुश्रजाति, रुपक, मध्यकाळ, मात्रा ६.

भज भगवान होई ईनसान धर गुरु ध्यान तज अभिमान.

६/०. नी धं पं म ग़ री सा | री म प प ध़ म़ प |
भ ज भ ग वा न | हो ई ई न सा न |

धᵛ धᵛ गᵛ रीᵛ सा नीᵛ धᵛ | सा नीᵛ सा रीᵛ सा नीᵛ धᵛ प म गᵛ रीᵛ सा
ध • र गु रु ध्या न | त ज अ भि मा न

पाठ १८.

रा० परज. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

कछु न पायो तु जगतमें दिव्या ध्रिसकल प्रभुकेरे भजतहे योगी सुरमौनींद्र जगन्नाथको आत्म सुखार्थ.

१६ सा रीᵛ नी सा | नी धᵛ म धᵛ | सा नी धᵛ प | म ग रीᵛ सा | सा ग |
।।।। क छु न पा | _ यो तु . | जं ग | त में | दि व्या |

म म धᵛ धᵛ | धᵛ रीᵛ सा रीᵛ | सा नी म धᵛ | ग ग ग ग | म धᵛ नी सा |
ध्रि स क ल | प्र भु | के रे | भ ज त हे | यो गी |

सा रीं नी सा | सा नी ध नी | सा ग रीं | रीं सा नी ध | नी रीं सा रीं |
सु र मौ | नीं द्र | ज ग न्ना | _ थ को | आ त्म सु |

सा नी म ध
स्वा र्थ ▪

पाठ १९.

रा० रामग्री, ताल तिश्रजाति आडो चौतालो, मध्यकाळ, मात्रा ११.

भज मनरे हरि नाम सदा, तज विषय संग मोहमदा, धर ध्यान तुही नररे तदा,
कर शर्णगुरु दुःख न कदा.

११ ग म | प सा नी | ध प ग म | रीं सा सा | ग म | प ध प | ध नी सा |
भ ज | म न रे | ह रि ना | म स दा | त ज | वि ष य | सं ग मो |

स नी ध प म ग | नी सा | ग म प | ध नी सा | रीं सा नी ध | ग म | रीं सा नी |
ह म दा | ध र | ध्यान तु | ही न र | हे [illegible] | क र | श ण गु |

धृ प्र म् प् ग् म् | रीᵛ सा सा
रु दुः ख | न क दा

पाठ २०.

रा० भिमपलास. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ मात्रा १६.

शांतिकार कृपालुहो प्रभुदिन दयाल कोई तेरी कुदरत देखे क्याहे मजाल (शांतिकार) मेरी तो अल्प मती अस्तु ती करनका तु दे ख्याल. (शांतिकार) पापकर्म परहरो दुःख सब दुरकरो नेहाल (शांतिकार) प्रतिदिन प्राणी मात्र पोशण करोहो तुम मयाल.

१६ नीᵛ सा गᵛ म | प धᵛ म प | गृᵛ म प म | गᵛ री० सा | सा नीᵛ धृᵛ प्र | म् प्र नीᵛ सा |
शां ति का र | कृ पा लु हो | प्र भु दि न | द या ल | को इ ते री | कु द र त |

म गᵛ प म | गᵛ री० सा | नीᵛ सा गᵛ म | नीᵛ सा् ग्ᵛ म् प् गᵛ म् |
दे खे क्या हे | म जा ल | शां ति का र | मे री तो अ ल्प म ती |

॥ प नी सा री सा नी ध प | ग री सा | नी सा ग म | सा नी सा री सा नी ध प |
अ स्तु ति क र न का तु | दे ख्या ल | शां ति का र | पा प क र्म प र ह रो |

॥ म प नी नी ध प म प | ग री सा | नी सा ग म | ग ग री सा री री सा नी |
दुः ख स ब दु र क रो | ने हा ल | शां ति का र | प्र ति दि न प्रा णी मा त्र |

॥ सा नी ध प नी नी ध प | ग री सा ॥
पो श ण क रो हो तु म | म या ल ॥

दुगनी.

॥ नी नी सा सा ग ग म म | प प ध ध म म प प | ग ग म म प प म म |

॥ ग ग री री स स | सा सा नी नी ध ध प प | म म प नी नी सा सा

॥ म म ग ग प प म म | ग ग री री सा सा |

आड.

नी सा ग म | प ध म प | ग म प म | ग री सा ✻

सा नी ध प | म प नी सा | म ग प म | ग री सा |

अतीत.

नी सा ग म | प ध म प | ग म प म | ग री म ग री सा ✻

सा नी ध प | म प नी सा | म ग प म | ग री म ग री सा ॥